महाशिवरात्रिव्रत

एक बार ऋषियों ने सूतजी से पूछा कि किस व्रत से सन्तुष्ट होकर भगवान् शिव सच्चा सुख प्रदान करते हैं? किस व्रत से भुक्ति एवं मुक्ति प्राप्त होती है।

केन व्रतेन सन्तुष्टः शिवो यच्छति सत्सुखम्।
भुक्तिर्मुक्तिश्च लभ्येत भक्तैर्येन व्रतेन वै। (शि. पु. को. रु. सं. 38/3-4)

उत्तर में सूतजी भगवान् शिव का वचन सुनाते हुए कहते हैं कि भुक्ति एवं मुक्ति प्रदान करने वाले अनेक शैव-व्रत हैं परन्तु उन सब में श्रेष्ठ शिवरात्रि व्रत है। भुक्ति एवं मुक्ति के इच्छुकलोगों को यह व्रत करना चाहिये। इस व्रत से हितकर अन्य कोई व्रत नहीं है। धर्मसाधन के लिये इससे श्रेष्ठ व्रत कोई नहीं है। यह व्रत निष्कामी, सकामी, सभी वर्णों एवं आश्रमों के लोगों , स्त्री एवं बच्चे, दास एवं दासियों तथा देवों आदि सभी शरीरधारियों के लिये यह श्रेष्ठ है।

तस्मात्तदेव कर्तव्यं भुक्तिमुक्तिफलेप्सुभिः।।
एतस्माच्च व्रतादन्यन्नास्ति नृणां हितावहम्।
एतद्व्रतन्तु सर्वेषां धर्मसाधनमुत्तमम्।।
निष्कामानां सकामानां सर्वेषां च नृणान्तथा।
वर्णनामाश्रमाणां च स्त्रीबालानां तथा हरे।।
दासानां दासिकानां च देवादीनां तथैव च।
शरीरिणां च सर्वेषां हितमेतद्व्रतं वरम्।। (शि. पु. को. रु. सं. 38/20-23)

इस देश में जितने प्रकारके पूजा-पार्वण, व्रत-उपवास तथा होम-नियम प्रचलित हैं उनमें से किसी का भी शिवरात्रि-व्रत के समान प्रचार और प्रसार नहीं है। हिन्दू स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध, प्रौढ़-युवा- प्रायः सभी वर्गोंके लोग किसी-न-किसी रूप में इसके अनुष्ठान में रत देखे जाते हैं। बहुत से लोग यथाविधि पूजादि न करते हुए भी उपवास करते हैं तथा कुछ लोग मात्र रात्रि-जागरण कर दूसरों द्वारा की जाने वाली पूजा में ही भाग लेकर पुण्य का कुछ भाग लेना चाहते हैं। हिन्दू समाज मुख्यतः सौर, गाणपत्य, शैव, शाक्त एवं वैष्णव- इन पाँच सम्प्रदायों में बँटा हुआ है। इनमें से जो जिसके उपासक हैं वे अपने इष्टदेव को छोड़कर अन्य की उपासना प्रायः नहीं करते। परन्तु इस शिवरात्रि-व्रत की ऐसी महिमा है- शास्त्र में भी ऐसा ही विहित है तथा इसी विधान का आजतक पालन होता आया है- कि सम्प्रदाय के भेद को त्यागकर सभी मनुष्य इसका पालन करते हैं।

पार्वती के यह पूछने पर कि 'आप किस कर्म, किस व्रत या किस प्रकार की तपस्या से प्रसन्न होते हैं?' भगवान् शिव कहते हैं कि-

फाल्गुने कृष्णपक्षस्य या तिथिः स्याच्चतुर्दशी।

तस्यां या तामसी रात्रिः सोच्यते शिवरात्रिका।।
तत्रोपवासं कुर्वाणः प्रसादयति मां ध्रुवम्।
न स्नानेन न वस्त्रेण न धूपेन न चार्चया।
तुष्यामि न तथा पुष्पैर्यथा व्रतोपवासतः।। (कल्याण, शिवांक, पृ. 483)

अर्थात्– "फाल्गुन के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी-तिथी को आश्रयकर जिस अंधकारमयी रात्री का उदय होता है उसी को 'शिवरात्रि' कहते हैं। उस दिन जो उपवास करता है वह निश्चय ही मुझे सन्तुष्ट करता है। उस दिन उपवास करने से मैं जैसा प्रसन्न होता हूँ वैसा स्नान, वस्त्र, धूप और पुष्प के अर्पण से भी नहीं होता।"

महाशिवरात्रि-व्रत फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को किया जाता है। इसको प्रतिवर्ष करने से यह 'नित्य' और किसी कामनापूर्वक करने से 'काम्य' होता है। प्रतिपदादि तिथियों के अग्नि आदि अधिपति होते हैं। जिस तिथि का जो स्वामी हो उसका उस तिथि में अर्चन करना अतिउत्तम होता है। चतुर्दशी के स्वामी शिव हैं अथवा शिवजी की तिथि चतुर्दशी है। अतः उनकी रात्रि में व्रत किया जाने से इस व्रत का नाम 'शिवरात्रि-व्रत' होना सार्थक है। यद्यपि प्रत्येक मास की कृष्णचतुर्दशी शिवरात्रि होती है और शिवभक्त प्रत्येक कृष्णचतुर्दशी का व्रत भी करते हैं, किन्तु फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी के निशीथ(अर्धरात्रि) में ज्योतिर्लिंग का प्रादुर्भाव हुआ था, इस कारण वह महाशिवरात्रि मानी जाती है।

इस व्रत को सभी कर सकते हैं। इस व्रत को नहीं करने से दोष होता है। यह व्रत भी एकादशी आदि की तरह उपोष्य है और इसके व्रतकालादि का निर्णय भी उसी प्रकार किया जाता है। सिद्धान्तरूप में आज के सूर्योदय से कल के सूर्योदयतक रहनेवाली चतुर्दशी को 'शुद्धा' और अन्य 'विद्धा' कहलाती है। विद्धा में प्रदोष(रात्रि का आरंभ) और निशीथ(अर्धरात्रि) की चतुर्दशी ग्राह्य है। अर्धरात्रि की पूजा के संदर्भ में स्कंदपुराण में कहा गया है कि(फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को) '**निशिभ्रमन्ति भूतानि शक्तयः शूलभृद् यतः। अतस्तस्यां चतुर्दश्यां सत्यां तत्पूजनं भवेत्।।**' अर्थात् रात्रि के समय भूत, प्रेत, पिशाच, शक्तियाँ और स्वयं शिवजी भ्रमण करते हैं; अतः उस समय इनका पूजन करने से मनुष्य के पाप दूर हो जाते हैं। यदि शिवरात्रि(चतुर्दशी) त्रिस्पर्शा(अर्थात्– त्रयोदशी-चतुर्दशी-अमावस्या-इन तीनों के स्पर्श की) हो तो अधिक उत्तम होती है। इसमें भी रवि या भौमवार का योग(शिवयोग) और भी अच्छा होता है। व्रत की समाप्ति में पारण किया जाता है, किंतु शिवरात्रि के व्रत में यह विशेषता है कि इसका पारण चतुर्दशी में ही करना चाहिये और यह पूर्वविद्धा(**प्रदोषनिशीथोभयव्यापिनि**) चतुर्दशी होने से ही हो सकता है।

लोक में शिवरात्रिव्रत की अनेक विधियाँ प्रचलित हैं। व्यक्ति अपनी मान्यता एवं रुचि के

अनुसार किसी भी विधि का अनुसरण कर सकते हैं। इस पुस्तक के प्रथम भाग में शिवरात्रिव्रत का विस्तृत वर्णन 'शिवमहापुराण में शिवतत्त्व एवं उसकी उपासना' शीर्षकगत अध्याय में किया गया है। पाठक वहाँ देख सकते हैं। अतः हम यहाँ संक्षिप्तरूप से इस व्रत की चर्चा करेंगे। शिवरात्रिव्रत की सभी विधियों में सामान्य बातें इस प्रकार हैं – उपवास, शिवपूजा, रात्रिजागरण तथा पारण। विधियों में अन्तर संकल्पवाक्य, पूजाविधि तथा उसके मन्त्र तथा रात्रि में की जाने वाली पूजा के स्वरूप को लेकर है। यहाँ हम जिस विधि की चर्चा करने जा रहे हैं वह शिवपुराणोक्त विधि से थोड़ी भिन्न है। पाठक किसी भी विधि को ग्रहण कर सकते हैं।

महाशिवरात्रिव्रत की विधि

फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी के दिन एकभुक्त(एक बार भोजन) कर चतुर्दशी को प्रातःकाल की संध्या आदि से निवृत्त होकर माथे पर भस्म का त्रिपुण्ड्र और गले में रुद्राक्ष की माला धारण करके हाथ में जल लेकर '**शिवरात्रिव्रतं ह्येतत् करिष्येऽहं महाफलम्। निर्विघ्नमस्तु में चात्र त्वत्प्रसादाज्जगत्पते।।**' इस संकल्पमन्त्र को पढ़कर जल छोड़ दे और दिनभर शिवस्मरण करता हुआ यथाशक्ति मौन रहे। तत्पश्चात् सायंकाल के समय फिर स्नान करके शिव-मन्दिर में जाकर सुविधानुसार पूर्व या उत्तरमुख होकर बैठे और त्रिपुण्ड्र, भस्म तथा रुद्राक्ष धारण करके '**ममाखिल-पापक्षयपूर्वकसकलाभीष्टसिद्धये शिवपूजनं करिष्ये**' यह संकल्प करे। इसके बाद ऋतुकाल के गन्ध-पुष्प, बिल्वपत्र, धतूरे के फूल, घृतमिश्रित गुग्गुल की धूप, दीप, नैवेद्य और नीराजन आदि की सामग्री समीप रखकर रात्रि के चार प्रहरों में चार बार पृथक-पृथक पूजन करे।

प्रथम प्रहर में दुग्धद्वारा शिव की ईशान-मूर्ति को, द्वितीय प्रहर में दधिद्वारा अघोर-मूर्ति को, तृतीय में घृतद्वारा वामदेव-मूर्ति को एवं चतुर्थ में मधुद्वारा सद्योजात-मूर्ति को स्नान कराकर पूजन करना चाहिये।

दुग्धेन प्रथमे स्नानं दध्ना चैव द्वितीयके।
तृतीये तु तथाऽऽज्येन चतुर्थे मधुना तथा।। (कल्याण, शिवांक पृ. 483)

चारों प्रहर की पूजा[1] पंचोपचार, षोडशोपचार या राजोपचार-जिस विधि से बन सके समानरूप से करे और साथ में रुद्रपाठादि[2] भी करता रहे। इस प्रकार व्रत करने से पाठ, पूजा, जागरण एवं उपवास-सभी सम्पन्न हो जाते हैं। पूजा की समाप्ति पर नीराजन, मन्त्रपुष्पांजलि और अर्घ्य तथा

---

1. पूजा अपने-अपने अधिकार के अनुसार वैदिक, तान्त्रिक, लौकिक अथवा केवल नाममंत्रों से करे। जो लोग मंदिर में न जा सकें तो वे घर में पार्थिवलिंग की पूजा कर सकते हैं। विविध उपचारों से पूजा की विधियाँ तथा पार्थिव-पूजा की विधि इसी पुस्तक में अन्यत्र दी गयी है। मंदिर में स्थापित लिंग की पूजा में आवाहन, प्राणप्रतिष्ठा तथा विसर्जन आदि की क्रिया नहीं की जाती है।
2. अर्थात् शतरुद्रिय, शिवसहस्रनाम, रुद्रहृदयोपनिषद्, शिवगीता तथा अनान्य स्तोत्रों का पाठ करें।

परिक्रमा करे। प्रत्येक बार के पूजन में '**मया कृतान्यनेकानि पापानि हर शङ्कर। शिवरात्रौ ददाम्यर्घ्यमुमाकान्त गृहाण मे।।**' – से अर्घ्य दे।

प्रभात में विसर्जन के बाद व्रत की कथा[1] सुनकर इस प्रकार प्रार्थना करते हुए पारण करना चाहिये –

संसारक्लेशदग्धस्य व्रतेनानेन शङ्कर।

प्रसीद सुमुखो नाथ! ज्ञानदृष्टिप्रदो भव।। (कल्याण, शिवांक पृ. 483)

अर्थात् – 'हे शंकर! मैं नित्य संसार की यातना से दग्ध हो रहा हूँ, इस व्रत से आप मुझ पर प्रसन्न हों। हे प्रभो! सन्तुष्ट होकर आप मुझे ज्ञानदृष्टि प्रदान करें।'

अगर सम्भव हो सके तो शिवरात्रि का व्रत सदैव करना चाहिये और न बन सके तो 14 वर्ष के बाद उद्यापन कर देना चाहिये। उद्यापन के लिये चावल, मूँग और उड़द आदि से 'लिंगतोभद्र' मण्डल बनाकर उसके बीच में सुवर्णादि[2] के सुपूजित दो कलश स्थापन करे और चारों कोणों में तीन – तीन कलश स्थापन करे। इसके बाद ताँबे के नाँदिये (बैल) पर विराजे हुए सुवर्णमय शिवजी और चाँदी की बनी हुई पार्वती को बीच के दोनों कलशों पर यथाविधि स्थापित करके अपने अधिकार के अनुसार (या पद्धति के अनुसार) सांगोपांग षोडशोपचार पूजन और हवनादि करे। अन्त में गोदान, शय्यादान, भूयसी आदि देकर और ब्राह्मणभोजन कराके घंटा आदि विहित वाद्य भी बजाये।

शिवरात्रि के व्रत में कठिनाई तो इतनी है कि इसे वेदपाठी विद्वान् ही यथाविधि सम्पन्न कर सकते हैं और सरलता इतनी है कि पठित – अपठित, धनी – निर्धन – सभी अपनी – अपनी सुविधा या सामर्थ्य के अनुसार सहस्त्रों रुपये लगाकर भारी समारोह से अथवा मेहनत – मजदरी से प्राप्त हुए एक – दो रुपये के गाजर, बेर और मूली आदि सर्वसुलभ फल – फूल आदि से पूजन कर सकते हैं। दयालु शिवजी छोटी – से – छोटी और बड़ी – से – बड़ी सभी पूजाओं से प्रसन्न होते हैं। भगवान् शिव की प्रसन्नता व्रती की भक्ति पर निर्भर करती है। भक्तिपूर्वक वह चाहे सस्ती वस्तुएँ ही अर्पित करे भगवान् शिव प्रसन्न हो जाते हैं। अगर भक्ति से रहित होकर अपना सर्वस्व भी अर्पित कर दें तो वे प्रसन्न नहीं होते।

सर्वस्वमपि यो दद्यात् शिवे भक्तिविवर्जितः।

न तेन फलभागी स्याद्भक्तिरेवात्र कारणम्।। (वीरमित्रोदयः पूजाप्रकाशः पृ. 221)

(उपर्युक्त लेख मुख्यतः गीताप्रेस, गोरखपुर, द्वारा प्रकाशित 'व्रत – परिचय', शिवांक तथा संक्षिप्त शिवपुराण पर आधारित है।)

❁❁❁❁❁❁

1. शिवरात्रिव्रत की एक – दो कथाएँ इस पुस्तक में भी दी गयीं हैं।
2. सोना, चाँदी अथवा ताँबें के कलश।